Toppersnotes

Unleash the topper in you

UGC-NET

इतिहास

National Testing Agency (NTA)

पेपर 2 || भाग – 3

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	आधुनिक इतिहास	
1.	**मराठा साम्राज्य, ईस्ट इण्डिया कंपनी, 19वीं शताब्दी**	1
	➢ मराठा साम्राज्य तथा पेशवा काल	1
	➢ शिवाजी (1627–1680 ई.)	2
	➢ संभाजी (1680-1689)	9
	➢ राजाराम (1689-1700 ई)	10
	➢ शिवाजी II और ताराबाई (1700 ई.–1707 ई.)	10
	➢ शाहू 1707–1749 ई.	10
	➢ पेशवाओं का काल	11
	➢ भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन	17
	➢ 19 वीं शताब्दी : सामाजिक, धार्मिक एवं पुनर्जागरण ।	50
	➢ स्वामी विवेकानन्द एवं रामकृष्ण मिशन	55
	➢ यंग बंगाल आन्दोलन	57
	➢ 1857 का विद्रोह / क्रांति	59
	➢ प्रमुख जन, आदिवासी तथा किसान आन्दोलन	69
	➢ भारत के किसान विद्रोह व आन्दोलन	70
	➢ भारत के आदिवासी विद्रोह	72
	➢ राष्ट्रीय आन्दोलन	75
	➢ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना	79
	➢ उदारवादी युग (1885-1905)	80
2.	**भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस**	82
	➢ होमरूल आन्दोलन	92
	➢ राष्ट्रीय आन्दोलन का तीसरा चरण: गांधी युग (1919-1947)	95
	➢ स्वराज्य पार्टी	103
	➢ साइमन कमीशन (1927-28 ई.)	104
	➢ नेहरू रिपोर्ट (1928)	105
	➢ गोलमेज सम्मेलन (1930-1932 ई.)	110
	➢ हरिजन सेवा संघ (1932)	113
	➢ अगस्त प्रस्ताव (1940)	115
	➢ भारत छोड़ो आन्दोलन (1942) - Quit India Movement	116
	➢ वेवेल योजना (1945)	118
	➢ शिमला सम्मेलन (1945)	118
	➢ कैबिनेट मिशन (1946 ई.)	119

3.	**सुभाष चन्द्र बोस व आजाद हिन्द फ़ौज**	122
	➢ परिचय	122
	➢ भारत का संवैधानिक विकास क्रम	124
	➢ संविधान की विशेषताएँ एवं निर्माण	128
	➢ संविधान सभा	131
	➢ भीमराव अंबेडकर	135
	➢ सरदार वल्लभभाई पटेल	138
	➢ नई शिक्षा नीति-2020 (NEP)	147
	➢ प्रमुख पुस्तकें और लेखक	149
4.	**ऐतिहासिक प्रणाली**, **शोध कार्य प्रणाली तथा इतिहास लेखन**	153
	➢ इतिहास का अर्थ	153
	➢ इतिहास का प्रमुख विषयों से समन्वय	158
	➢ भारतीय परिप्रेक्ष्य में उत्तर-आधुनिकता	161
	➢ कार्ल मार्क्स	164
	➢ संकल्पना**,** विचार एवं शब्दावलियाँ	166
	➢ इतिहास की अन्य प्रमुख शब्दावली	177
	➢ भारत में प्रमुख कथन व कथनकार	178
	➢ प्रमुख ऐतिहासिक स्थल	181
	➢ ब्रिटिशकाल के प्रमुख कारखाना अधिनियम	182
	➢ प्रमुख क्रांतिकारी घटनाएँ	183
	➢ भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ व तिथियाँ	183
	➢ भारतीय इतिहास के तथ्यों का सार संग्रह	195
	➢ मध्यकालीन इतिहास सार संग्रह	202
	➢ आधुनिक काल - सार संग्रह	206

1 CHAPTER मराठा साम्राज्य, ईस्ट इण्डिया कंपनी, 19वीं शताब्दी

मराठा साम्राज्य तथा पेशवा काल

मराठा साम्राज्य

- जी. एस. सरदेसाई के अनुसार 'मराठा' शब्द की उत्पत्ति राठा शब्द से हुई है।
- इस शक्ति का उदय महाराष्ट्र राज्य में हुआ था।
- इसका क्षेत्र मुख्य रूप से कोंकण, खानदेश, बरार, मध्य भारत, हैदराबाद तक सीमित था।
- विजयनगर के पतन के बाद स्थापित प्रथम हिन्दू राज्य मराठा ही था।
- वी. स्मिथ ने मराठा राज्य को 'डकैतों का राज्य' कहा है।

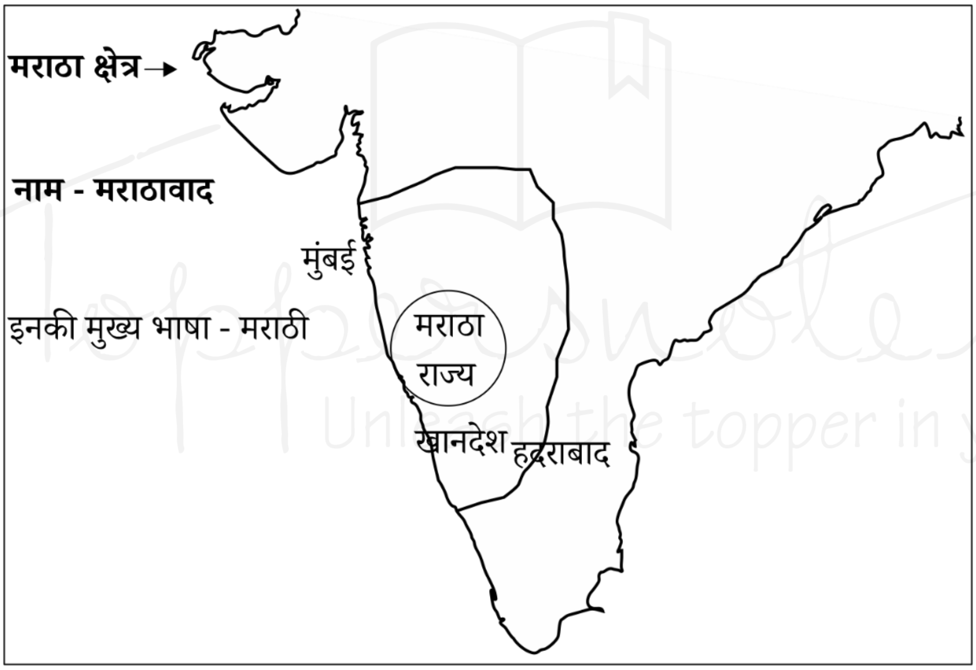

प्रमुख ग्रंथ एवं लेखक:

- Rise Of Maratha Power – एम. जी. रानाडे
- Shivaji And His Times – जदुनाथ सरकार
- History Of The Marathas – ग्रांट डफ (मराठा साम्राज्य का उद्भव अग्निकाण्ड से माना जाता है)
- मराठा शक्ति का उत्कर्ष शिवाजी के नेतृत्व में 17वीं शताब्दी में हुआ।
- मराठों का उत्थान मुगलों की भारत से मुक्ति का राष्ट्रीय आंदोलन था।
- जहाँगीर ने मराठों को अपनी सेना में भर्ती किया।
- शाहजहाँ ने शंभाजी भोसले (शिवाजी के पिता) को 5000 का मनसब प्रदान किया।

शिवाजी (1627–1680 ई.)

- जन्म : 20 अप्रैल 1627 (प्रामाणिक तिथि – 19 फरवरी 1630)
- जन्मस्थान : पुणे के निकट जुन्नान नगर, शिवनेरी का किला
- माता : जीजा बाई (देवगिरी के जागीरदार यादवराव जाधव की पुत्री)
- पिता : शाहजी भोसले
- संरक्षक/शिक्षक : दादाजी कोंडदेव
- शिवाजी का पालन-पोषण पुणे में हुआ।
- शिवाजी का संबंध मेवाड़ के सिसोदिया राजवंश से था।
- शाहजी भोसले ने जीजाबाई और बालक शिवाजी को पुणे (लाल महल) में छोड़ दिया और तुकाबाई मोहिते से विवाह कर लिया।
- 1647 में दादाजी कोंडदेव की मृत्यु के बाद शिवाजी ने पुणे पर पूर्ण नियंत्रण कर लिया।
- शिवाजी का पहला विवाह 1640 ई. में साईबाई निम्बालकर से हुआ।
- शिवाजी की अन्य प्रमुख पत्नियाँ पुतलीबाई और सोयराबाई थीं।
- शिवाजी ने अपनी पत्नी **सोयराबाई** को राजमहिर्षि की उपाधि प्रदान की।
- राजाराम की माता **सोयराबाई** थीं।
- शम्भाजी की माता **साईबाई** थीं।
- शिवाजी के गुरु का नाम **समर्थ रामदास** था।
- समर्थ रामदास ने दासबोध नामक पुस्तक लिखी।

शिवाजी की प्रारंभिक विजय

- **तोरणगढ़ विजय** –
  - यह शिवाजी की प्रथम विजय थी।
  - 1646 ई. में शिवाजी ने **तोरणगढ़ का किला** जीत लिया।
  - इस किले का नाम शिवाजी ने बदलकर **प्रचंडगढ़** रखा।
- **कोण्डाना विजय – 1647**
  - शिवाजी ने 1647 में इस पर अधिकार कर लिया।
  - इस किले का नाम सिंहगढ़ दुर्ग रखा।
  - बिजापुर राज्य ने इस किले पर 1649 में पुनः अपना नियंत्रण प्राप्त कर लिया।
- **जावली अभियान – 1656**
  - शिवाजी ने 1656 में चन्द्रराव मोरे की हत्या करके जावली किले पर अधिकार कर लिया।
  - यह शिवाजी की प्रथम वास्तविक जीत थी।
  - जावली घाटी के पास प्रतापगढ़ का किला बनवाया।
  - इस विजय के बाद शिवाजी के राज्य की सीमाएँ पुर्तगालियों के क्षेत्र तक फैल गईं।
  - तटीय क्षेत्र की सुरक्षा के लिए एक शक्तिशाली नौसेना का गठन शिवाजी ने किया।
- **कोलाबा अभियान**
  - शिवाजी ने कोलाबा में एक जहाजी अड्डा बनवाया।
  - 1657 में शिवाजी ने कोंकण क्षेत्र को जीत लिया।

- **अफजल खां का वध – 1659 ई.**
  - ✓ बिजापुर राज्य ने अफजल खां (अब्दुल्ला भट्टारी अफजल खां) को शिवाजी के विरुद्ध 1659 में भेजा।
  - ✓ इस समय शिवाजी प्रतापगढ़ के किले में थे।
  - ✓ सैनिकों को रवाना करते समय अफजल खां ने कहा – मैं घोड़े से उतरे बिना ही शिवाजी को गिरफ़्तार कर लाऊँगा।
  - ✓ अफजल खां ने अपने दूत कृष्णाजी भास्कर के माध्यम से शिवाजी से मुलाक़ात करने का प्रयास किया।
  - ✓ शिवाजी के दूत पंतोजी गोपीनाथ के माध्यम से वार्ता की पुष्टि हुई।
  - ✓ शिवाजी और अफजल खां की मुलाक़ात प्रतापगढ़ (परिग्राम) में नवम्बर 1659 को होने वाली थी। शिवाजी अपने अंगरक्षकों (नींव महल तथा शम्भुजी कांवजी) के साथ मुलाक़ात वाले स्थान पर पहुँचे।
  - ✓ अफजल खां भी अपने अंगरक्षक सैयद बांदा के साथ मुलाक़ात वाले स्थान पर पहुँचा।
  - ✓ अफजल खां का उद्देश्य शिवाजी की हत्या करना था।
  - ✓ एक ब्राह्मण कृष्णाजी भास्कर ने अफजल खां की योजना पहले ही शिवाजी को बता दी थी।
  - ✓ नवम्बर 1659 को प्रतापगढ़ में शिवाजी ने अपनी बघनख (लोहे के पंजे) से अफजल खां का वध कर दिया।
  - ✓ अफजल खां के वध के बाद शिवाजी ने 1660 में पन्हाला, बसंतगढ़, खेलना, पंगना पर अधिकार कर लिया। इसके बाद उन्होंने मुगलों से संघर्ष प्रारम्भ किया और कई क़िले जीत लिए।
- **मुग़लों से संघर्ष**
  - ✓ शिवाजी ने 1660 ई. में बीजापुर के शासकों को पन्हाला का किला वापस लौटा दिया तथा उनसे संधि कर ली। इसके बाद शिवाजी ने अपना ध्यान मुगलों की ओर लगाया।
  - ✓ 1660 से 1674 तक शिवाजी और मुगलों के बीच लगातार संघर्ष चलता रहा।
  - ✓ शिवाजी का प्रथम मुगल संघर्ष 1657 में आरम्भ हुआ, उस समय मुगल शासक शाहजहाँ था।
  - ✓ जब औरंगज़ेब उत्तराधिकार युद्ध (1657-1659) में सफलता पाने के लिए जाता है, उस समय शिवाजी ने अहमदनगर तथा जुन्नेर पर आक्रमण किया।
  - ✓ उस समय औरंगज़ेब अहमदनगर का गवर्नर था।
  - ✓ 1658-59 में मुगल उत्तराधिकार युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद औरंगज़ेब शाहजहाँ के बाद बादशाह बना।
- **शाइस्ता खाँ से संघर्ष**
  - ✓ 1659 में औरंगज़ेब ने दक्षिण भारत में अपने मामा शाइस्ता खाँ को गवर्नर बनाकर भेजा।
  - ✓ शाइस्ता खाँ को औरंगज़ेब ने शिवाजी को मारने का आदेश दिया।
  - ✓ मई 1660 में शाइस्ता खाँ ने पुणे पर अधिकार कर लिया और लाल महल को अपना मुख्य केन्द्र बनाया।
  - ✓ 1660 से 1663 तक शाइस्ता खाँ ने पुणे को अपने अधीन रखा।
  - ✓ 15 अप्रैल 1663 को शिवाजी ने मात्र 400 सैनिकों के साथ मध्य रात्रि में शाइस्ता खाँ पर आक्रमण किया।
  - ✓ इस संघर्ष में शिवाजी ने शाइस्ता खाँ को मारने का प्रयास किया, लेकिन वह वहाँ से भागकर औरंगाबाद चला गया।
  - ✓ इस संघर्ष में शिवाजी के वार से शाइस्ता खाँ की उंगलियाँ कट गईं।
  - ✓ इस संघर्ष में शाइस्ता खाँ का बेटा फतेह खाँ मारा गया।
  - ✓ इस अभियान में मारवाड़ का जसवंत सिंह शाइस्ता खाँ के साथ था, लेकिन उसने अप्रत्यक्ष रूप से शिवाजी की सहायता की थी।
  - ✓ औरंगज़ेब ने बाद में शाइस्ता खाँ को बंगाल का गवर्नर बना दिया तथा अपने पुत्र मुअज्ज़म को दक्षिण का गवर्नर नियुक्त किया।

- **सूरत की प्रथम लूट – 10 फरवरी 1664**
  - ✓ शिवाजी ने शाइस्ता खाँ को हराने के बाद 10 फरवरी 1664 को सूरत पर आक्रमण किया तथा उसे लूटा।
  - ✓ सूरत में मुग़ल फौजदार इनायत खां तैनात था।
  - ✓ इस समय सूरत पर अंग्रेज़ों का व्यापारिक अधिकार भी था।
  - ✓ यहाँ ईस्ट इंडिया कम्पनी का गवर्नर हेनरी ऑक्सेन्डन था।

शिवाजी और जयसिंह

- सूरत की लूट के बाद औरंगज़ेब ने शिवाजी के खिलाफ आमेर के शासक मिर्जा राजा जयसिंह को भेजा।
- सितंबर 1664 को इस अभियान पर जाते समय जयसिंह ने कहा – "हमें शिवाजी को एक वृत्त के केन्द्र की तरह बाँध कर लाना है।"
- इस अभियान में मिर्जा जयसिंह के साथ दिलेर खाँ था।
- शिवाजी व मिर्जा जयसिंह के मध्य संघर्ष हुआ। इस संघर्ष में शिवाजी की ओर से मुरारबाजी देशपांडे वीरगति को प्राप्त हुए।
- **पुरन्दर की संधि – 11 जून 1665 (मनूची के अनुसार)**
  - ✓ शिवाजी और जयसिंह (औरंगज़ेब की ओर से) के मध्य पुरन्दर की संधि हुई।
  - ✓ इस संधि के समय इतिहासकार मनूची उपस्थित था।
- **संधि की शर्तें**
  - ✓ शिवाजी ने अपने 35 किलों में से 23 किले मुगलों को वापस दे दिए।
  - ✓ औरंगज़ेब ने शिवाजी के पुत्र सम्भाजी को 5000 का मनसब दिया।
  - ✓ बीजापुर के विरुद्ध शिवाजी ने मुगलों का साथ देने का वचन दिया।
  - ✓ संधि के बाद शिवाजी के पास 12 किले शेष रहे।

शिवाजी व आगरा दरबार

- जयसिंह के कहने पर शिवाजी आगरा दरबार में जाने पर सहमत हुए।
- शिवाजी और सम्भाजी 5 मार्च 1666 को आगरा के लिए रवाना हुए।
- 11 मई 1666 को शिवाजी आगरा पहुँच गए।
- 12 मई 1666 को रामसिंह शिवाजी को लेकर आगरा दरबार में गया।
- औरंगजेब द्वारा शिवाजी को पंचहज़ारी मनसबदार पंक्ति में खड़ा होने की बात को लेकर, शिवाजी ने इसे अपना अपमान समझा।
- शिवाजी उस पंक्ति से उठकर बाहर निकल गए।
- औरंगजेब ने शिवाजी को आगरा किले में जयपुर हाउस (भवन) में रामसिंह के संरक्षण में नज़रबंद करवा दिया।
- शिवाजी को रामसिंह (मिर्जा जयसिंह का पुत्र) की देखरेख में छोड़ा गया।
- शिवाजी अपने सौतेले भाई हिरोजी का वेष धारण कर स्थान बदलकर वहाँ से फरार हो गए।
- शिवाजी आगरा से निकलकर मथुरा – प्रयाग – काशी – बंगाल – मध्यप्रदेश – उडीसा – गोलकुंडा – गोंडवाना होते हुए 12 सितम्बर 1666 को रायगढ़ पहुँचे।
- शिवाजी ने 1668 में जसवंत सिंह जी के प्रयास से मुअज्जम (औरंगजेब का पुत्र) से संधि कर ली।
- शिवाजी को औरंगजेब ने "राजा" की उपाधि प्रदान की।
- संभाजी को 5000 मनसब तथा बरार का क्षेत्र दिया गया।
- शिवाजी को औरंगजेब ने बीजापुर व गोलकुंडा क्षेत्र पर चौथ (1/4) व सरदेशमुखी वसूलने का अधिकार दिया गया।
- 1670 में शिवाजी का मुगलों के साथ पुनः संघर्ष शुरू हो गया।

- **कोंढाणा (सिंहगढ़) की दूसरी विजय – 1670 ई.**
  - ✓ शिवाजी ने यह अभियान 4 फरवरी 1670 को तान्हाजी मालसुरे के नेतृत्व में आरंभ किया।
  - ✓ शिवाजी ने मुगलों से इस किले को जीत लिया।
  - ✓ इस अभियान में तान्हाजी शहीद हो गए।
  - ✓ तान्हाजी की मृत्यु पर शिवाजी ने कहा – *"हमने किला तो जीत लिया, लेकिन सिंह खो दिया।"*
  - ✓ शिवाजी ने कोंडाना का नाम बदलकर **सिंहगढ़** रखा।
- **सूरत की दूसरी लूट – 1670 ई.**
  - ✓ कोंडाना (सिंहगढ़) विजय के बाद शिवाजी ने पुनः सूरत की ओर ध्यान दिया।
  - ✓ 3 अक्टूबरबर 1670 को शिवाजी ने सूरत को लूटा।
  - ✓ इस लूट से शिवाजी को लगभग **66 लाख रूपये** प्राप्त हुए।
- **वाणी–डिंडोरी का युद्ध (नासिक, महाराष्ट्र)**
  - ✓ सूरत लूट की वापसी में कंचन-मंचन दर्रे के पास मुग़ल सेनापति इख़लास खां व दाऊद खां को मराठों ने हराया।
  - ✓ यह युद्ध नासिक जिले के वाणी-डिंडोरी गाँव के पास लड़ा गया।
  - ✓ इसके बाद मराठों ने **साल्हेर** तथा **मुल्हेर** के युद्ध में भी मुगलों को पराजित किया।
- **शिवाजी का प्रथम राज्याभिषेक – 1674 ई.**
  - ✓ शिवाजी ने अपने साम्राज्य की स्थापना करने के बाद अपना पहला राज्याभिषेक करवाया।
  - ✓ 16 जून 1674 को शिवाजी का प्रथम राज्याभिषेक रायगढ़ (राजधानी) में हुआ।
  - ✓ शिवाजी का राज्याभिषेक काशी के प्रसिद्ध विद्वान गंगाभट्ट द्वारा सम्पन्न कराया गया।
  - ✓ यह राज्याभिषेक हिरण्यगर्भ संस्कार द्वारा सम्पन्न हुआ।
  - ✓ इस अवसर पर शिवाजी ने कई उपाधियाँ धारण कीं, जैसे–छत्रपति, गौ-ब्राह्मण प्रतिपालक, हिन्दू धर्म उद्धारक, यवन-परपीड़क
  - ✓ शिवाजी ने रायगढ़ को अपनी राजधानी घोषित किया।
  - ✓ शिवाजी ने दो प्रकार की मुद्राएँ चलाईं– हूण (सोने का सिक्का), शिवराई (ताँबे का सिक्का)
  - ✓ प्रथम राज्याभिषेक (16 जून 1674) के **12वें दिन ही उनकी माता जीजाबाई का निधन** हो गया।
  - ✓ माता के निधन को अशुभ मानते हुए शिवाजी ने पुनः अपना राज्याभिषेक कराने का निश्चय किया।
  - ✓ इसलिए शिवाजी ने **लगभग 4 महीने बाद दूसरा राज्याभिषेक** करवाया।
- **दूसरा राज्याभिषेक – 4 अक्टूबरबर 1674**
  - ✓ शिवाजी का दूसरा राज्याभिषेक **तांत्रिक निश्चलपुरी गोस्वामी** द्वारा सम्पन्न कराया गया।
  - ✓ निश्चलपुरी गोस्वामी **कांची** के निवासी थे।

शिवाजी के अंतिम अभियान

- शिवाजी ने अपने नींवन के अंतिम समय में **कर्नाटक अभियान** चलाया, जिसे उनका **अंतिम अभियान** माना जाता है।
- कर्नाटक को उस समय "सोने की चिड़िया" कहा जाता था।
- 15 जुलाई 1677 को शेरखां लोदी ने शिवाजी को वैवाहिक संबंधों के माध्यम से कर्नाटक का कुछ भाग सौंपा।
- 1678 ई. में **जिंजी विजय (तमिलनाॲु)** शिवाजी की आखिरी विजय थी।
- कर्नाटक, जिंजी, मदुरै विजय से मराठा साम्राज्य की सीमा दक्षिण में कावेरी नदी तक विस्तृत हो गई।

- अभियान के समय शिवाजी ने अपने ज्येष्ठ पुत्र **संभाजी को पन्हाला किले में कैद** कर रखा था, क्योंकि उनके आचरण से वे असंतुष्ट थे।
- 14 अप्रैल 1680 को, 53 वर्ष की आयु में शिवाजी का निधन हुआ।
- उनके निधन के समय वे **रायगढ़** में थे।

शिवाजी का प्रशासन

- **राजा** :
  - ✓ यह साम्राज्य का सर्वोच्च पद था, जिसमें शासन की सारी शक्तियाँ निहित थीं।
  - ✓ राजा राज्य का अंतिम कानून निर्माता था।
  - ✓ उन्होंने अपने शासन की व्यवस्था को संगठित किया और **मराठा साम्राज्य की नींव मजबूत** की।
  - ✓ समकालीन यूरोपीय लेखक फ्रांसीसी यात्री **सम्यूएल बर्नियर** और अन्य इतिहासकारों ने शिवाजी की तुलना नेपोलियेन से की है।
  - ✓ रानाडे के अनुसार – शिवाजी ने नेपोलियेन की भाँति एक महान संगठक और असैनिक प्रशासन के निर्माणकर्ता थे।
- **शिवाजी का अष्टप्रधान मंडल**
  - ✓ शिवाजी ने अपने साम्राज्य को सुदृढ़ एवं संगठित बनाने के लिए 8 प्रमुख मंत्रियों की नियुक्ति की थी। इन्हें सामूहिक रूप से **अष्टप्रधान** कहा जाता है।
  - ✓ ये अष्ट प्रधान निम्न थे –

1. **पेशवा**
   - सम्पूर्ण राज्य की देखरेख करना इसका मुख्य कर्तव्य था।
   - राजा की अनुपस्थिति में कार्यों का संचालन करता था।
   - शिवाजी के प्रथम पेशवा – **मोरोपंत पिंगले**।
   - राजा के सभी आदेशों व पत्रों पर राजा की मुहर के नीचे पेशवा की भी मुहर लगती थी।
2. **अमात्य / मजुमदार**
   - यह **वित्त मंत्री** होता था।
   - राज्य की आय-व्यय की देखरेख करता था।
   - खजाने और लेखा-जोखा संभालना इसका कार्य था।
   - शिवाजी के प्रथम अमात्य – **रामचंद्र पंत नीलकंठ**।
3. **मंडी / वाकियानविस**
   - यह राजा के दैनिक कार्यों को लेखबद्ध करता था।
   - राजा के नींवन की रक्षा करना ली इनका मुख्य कार्य था।
   - प्रथम मंत्री - दोरोजी पंत
4. **सुमन्त / दबीर**
   - यह विदेश मंत्री होता था
   - प्रथम दबीर - रामचन्द्र त्रिंबक था।
5. **सचिव / शुक्र नवीस / चिटनीस**
   - यह राजकीय पत व्यवहार का कार्य देखता था।

6. **सेनापति / सर-ए-नोबत**
    - इसका कार्य सेना भर्ती करना था।
    - शिवाजी का प्रमुख सेनापति - हम्मीर राव मोहिते
7. **न्यायाधीश**
    - यह दीवानी और फौजदारी न्याय व्यवस्था की देखरेख करता था।
    - यह राजा के बाद मुख्य न्यायाधीश होता था।
8. **पंडितराव**
    - यह धार्मिक मामलों को देखता था। दान, धर्मकार्य और धार्मिक अनुशासन की व्यवस्था करना इसका कार्य था।
    - पाप करने वालों को दण्ड देना इसका कार्य था।
    - शिवाजी के समय पंडितराव रघुनाथराव पंडित थे।

➢ **प्रान्तीय प्रशासन**

✓ शिवाजी का साम्राज्य चार प्रान्तों में विभाजित था।

✓ प्रान्त का मुख्य अधिकारी सरसूबेदार/सर कारकून/देशाधिकारी होता था।

1. उत्तरी प्रान्तों में – बगलाना, डांग, कोली प्रदेश, दमन, सूरत और वेंकटक प्रदेश आते थे। उत्तरी प्रान्तों में सरसूबेदार त्र्यम्बक जींगले को बनाया गया था।
2. दक्षिण प्रान्तों में – दादर, बरसई का कोंकण और कनारा का तटीय क्षेत्र आता था। यहाँ का सरसूबेदार अंग्रे अन्नाजी दत्तो था।
3. दक्षिण-पश्चिमी प्रान्तों में – सतारा, कोल्हापुर, बेलगांव, धारवाड़ और कोंकण क्षेत्र आते थे। यहाँ का सरसूबेदार बत्तोजी पंत था।
4. चौथा प्रान्त – इसमें नवजीत क्षेत्र सम्मिलित थे। यहाँ का सरसूबेदार संताजी था।

✓ प्रान्तों को परगनों और गाँवों में विभाजित किया गया था।

➢ **साम्राज्य प्रशासन का ढांचा**

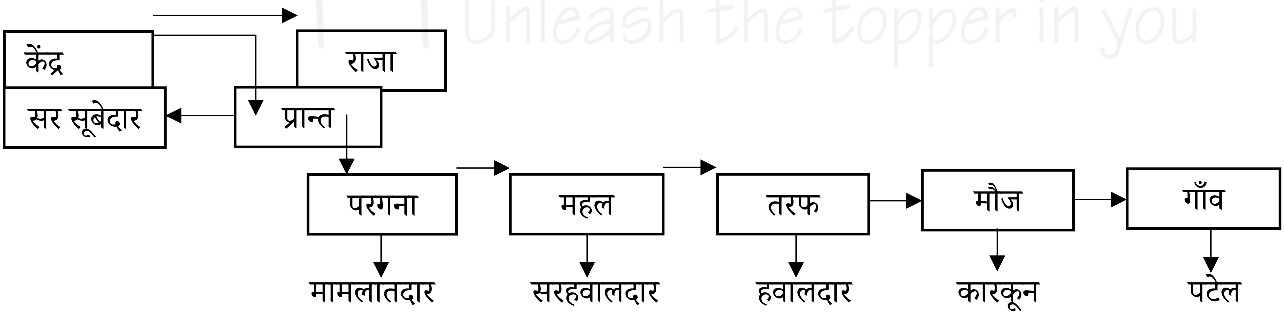

- **ग्राम प्रशासन**
  - ✓ गाँव का मुखिया पटेल होता था।
  - ✓ पटेल के नीचे कुलकर्णी होता था।
  - ✓ गाँवों के अन्य कारीगर व सेवक होते थे, जिन्हें क्रमशः बारह बलूते तथा बारह अलुते कहा जाता था।
- **राजस्व प्रशासन**
  - ✓ शिवाजी की राजस्व व्यवस्था मलिक अम्बर की रैयतवाड़ी प्रथा पर आधारित थी।
  - ✓ राज्य में कर वसूलने का काम मराठा अधिकारी करते थे।
  - ✓ कर अनाज या नकद दोनों रूप में लिया जाता था।
  - ✓ शिवाजी ने चौथ व सरदेशमुखी को आय का मुख्य साधन बनाया।
    - ✓ **चौथ** –
      - इसे खानदानी कर कहा जाता था।
      - यह कर किसी बाहरी क्षेत्र से उसके कुल उत्पादन का 1/4 (25%) हिस्सा चौथ के रूप में लिया जाता था।
      - शिवाजी ने गोलकुंडा से 5 लाख और बीजापुर से 3 लाख वसूल किए।
      - चौथ वसूली का केवल 25% हिस्सा राजा के पास पहुँचता था।
    - ✓ **सरदेशमुखी** –
      - यह शिवाजी के अधिकार वाले राज्यों से वसूला जाता था (वंशानुगत राज्य)।
      - यह आय के 10% के रूप में अतिरिक्त कर था।
      - इसे वसूलने वाला अधिकारी गुमाश्ता कहलाता था।
- **शिवाजी की सेना**
  - ✓ शिवाजी की सेना के मुख्य भाग घुड़सवार तथा पैदल सेना थे।
  - ✓ सभी सैनिकों को नकद वेतन दिया जाता था।
- **सेना की संरचना**
  - ✓ सेना का सर्वोच्च सेनापति राजा था।
  - ✓ सेना का सर्वोच्च अधिकारी सर-ए-नोबत कहलाता था।
  - ✓ सबसे छोटी रैंक हवलदार की थी।

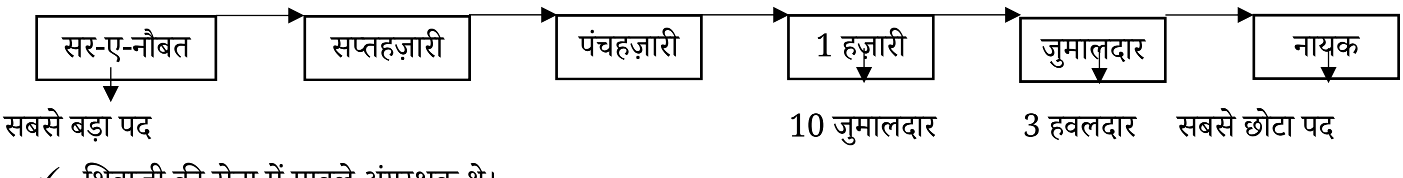

  - ✓ शिवाजी की सेना में मावले अंगरक्षक थे।
  - ✓ शिवाजी की घुड़सवार सेना को पागा कहा जाता था।
  - ✓ इसकी संख्या 30 से 40 हजार तक थी।
  - ✓ घुड़सवार सेना दो प्रकार की थी:

    (1) बरगीर (2) सिलेदार
- **बरगीर/पागा**
  - ✓ इसमें वस्त्र, शस्त्र और घोड़ों की व्यवस्था राज्य की ओर से की जाती थी।
  - ✓ यह शाही सेना थी, जो नियमित और व्यवस्थित होती थी।

Toppersnotes Unleash the topper in you

- **सिलेदार**
  - ✓ इसमें अरू, शस्त्र, वस्त्र तथा घोड़े स्वयं के होते थे।
  - ✓ इनका वेतन बरगीरों से अधिक होता था।
- **नौ सेना**
  - ✓ शिवाजी ने सीमाओं की सुरक्षा के लिए नौसेना का निर्माण किया।
  - ✓ इसका प्रमुख सरखेल कहलाता था।
  - ✓ शिवाजी ने फोलाबा को नौसेना का प्रमुख केंद्र बना रखा था।
  - ✓ शिवाजी ने छापामार/गुरिल्ला युद्ध पद्धति अहमदनगर के मलिक अम्बर से सीखी थी।
- **अन्य तथ्य**
  - ✓ शिवाजी की आराध्य देवी तुलजा भवानी थी।
  - ✓ शिवाजी की जन्मभूमि को मावल कहा जाता था।
  - ✓ महाराष्ट्र में संत तुकाराम शिवाजी के समकालीन थे। शिवाजी उनके विचारों से बहुत प्रभावित थे।
  - ✓ जदुनाथ सरकार की प्रमुख पुस्तकें –
    - शिवाजी एंड हिज टाइम्स
    - द हाउस ऑफ़ शिवाजी

संभाजी: 1680-1689

- शिवाजी ने अपने अंतिम समय में अपने बड़े पुत्र संभाजी को उत्तराधिकारी नियुक्त न कर अपने छोटे पुत्र राजाराम को उत्तराधिकारी के रूप में रखा गया।
- संभाजी की माता साईबाई निम्बालकर थीं।
  शासक बनने से पहले औरंगजेब ने संभाजी को 5000 का मनसब प्रदान किया।
- शिवाजी की पत्नी सोयराबाई ने अपने पुत्र राजाराम को गद्दी पर बिठाया।
- संभाजी पन्हाला किले से निकलकर हमीराव की सहायता से रायगढ़ पहुँचे।
- जुलाई 1680 को राजाराम और सोयराबाई को कैद कर लिया गया।
- जुलाई 1680 में संभाजी ने अपना शासन संभाला और दूसरे छत्रपति बने।
- संभाजी के सेनापति हमीराव मोहिते थे।
- शम्भाजी का पेशवा नीलोपंत था ।
- औरंगजेब ने शिवाजी को पहाड़ी चूहा तथा संभाजी को नारकीय पिता का नारकीय पुत्र कहा।
- 1681 - में औरंगजेब के पुत्र अकबर को संभाजी ने शरण दी थी ।
- संभाजी का सबले ज्यादा विश्वासपात्र मंत्री/मित्र किन्नोज का निवाली कवि कलश था।
- औरंगज़ेब ने अपने सेनापति मुकर्रब खान को संभाजी के खिलार भेजा।
- संगमेश्वर का युद्ध- 1689 में औरंगजेब व संभाजी के मध्य लड़ा गया।
- इसी समय मुकर्रब खान ने सम्भाजी को कवि कलश सहित गिरफ्तार वर किया
- औरंगजेब ने संभाजी के पुत्र शाहू को रायगढ़ के किले में कैद कर दिया।
- औरंगजेब ने संभाजी से इस्लाम धर्म अपनाने को कहा, लेकिन संभाजी ने मना कर दिया।
- मार्च 1689 में औरंगजेब ने संभाजी और कवि कलश को बंदी बनाकर हत्या करवा दी।
- शिवाजी द्वारा स्थापित अष्टप्रधान व्यवस्था का अंत संभाजी के काल में हुआ।

राजाराम 1689-1700 ई

- संगमेश्वर के युद्ध में संभाजी को औरंगज़ेब ने कैद कर लिया तब राजाराम ने 12 मार्च 1689 को अपना राज्याभिषेक करवाया।
- 1689 में रायगड पर मुगलों का आक्रमण हुआ ।
- आक्रमण से पूर्व राजाराम रायगढ छोड़कर जींजी चला गया।
- जींजी को अपना केन्द्र बनाकर संघर्ष जारी रखा।
- मुगल सेनापति जुफ्किकर खां ने सम्भाजी की पत्नी यसुबाई तथा पुत्र शाहू को गिरफ्तार कर लिया।
- 1698 तक राजाराम के नेतृत्व मे जींजी राजधानी रही।
- 1698 मे जींजी पर मुगल सेनापति जुल्फिकर खां का नियंत्रण स्थापित है गया।
- राजाराम ने 1699 ई. मे सतारा को अपनी राजधानी बनाया।
- राजाराम के समय मराठों की तीन राजधानियां रही
- रायगढ़, जींजी, सतारा
- राजाराम राजगद्दी का असली हक़दार शाहू को मानता था, वह कभी भी राजगद्दी पर नहीं बैठा।
- 1700 ई मे सिंहगढ मे राजाराम की मृत्यु हो गई।
- राजाराम ने शिवाजी द्वारा स्थापित अष्टप्रधान व्यवस्था को अपनाया और इसमें एक नया पद (प्रतिनिधि) जोड़ा।
- अब अष्टप्रधान व्यवस्था में कुल नौ पद हो गए।

शिवाजी II और ताराबाई (1700 ई.–1707 ई.)

- राजाराम की मृत्यु के बाद उसकी विधवा ताराबाई ने अपने पुत्र शिवाजी II को गद्दी पर बिठाया।
- शिवाजी II की संरक्षिका ताराबाई थी।
- **राजाराम की पत्नियां और उनके पुत्र:**
  1. ताराबाई (पुत्र - शिवाजी II) – (ताराबाई का पौत्र - राजाराम II)
  2. राजसबाई (पुत्र – संभाजी II)
- मनूची ने कहा कि "ताराबाई ने मुगलों के दांत खट्टे कर दिए।"
- 1707 में औरंगजेब की मृत्यु हो गई।
- औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल शासक बहादुरशाह प्रथम बना।
- बहादुरशाह ने शाहू को कैद से छुड़ाया।
- 1707 में खेड़ा के युद्ध में शाहू ने ताराबाई को परास्त किया।
- 1707 में शाहू (संभाजी का पुत्र) छत्रपति बना।

शाहू 1707–1749 ई.

- 1707 में शाहू ने सतारा को अपनी राजधानी बनाया।
- यदुनाथ सरकार के अनुसार शाहू का वास्तविक नाम शिवाजी II था।
- शासक बनने से पूर्व शाहू औरंगजेब की कैद में थे।
- शाहू को औरंगजेब ने 7000 का मनसबदार बताया तथा राजा/ईमामदार की उपाधि प्रदान की थी।
- **खेड़ा का युद्ध (12 अक्टूबर 1707 ई.)**
  - ✓ शाहू और ताराबाई के मध्य

- ✓ शाहू ने बालाजी विश्वनाथ की सहायता से यह युद्ध जीत लिया।
- ✓ इस युद्ध में धन्नाजी जाधव शाहू के पक्ष में आ गए।
- ✓ ताराबाई इस युद्ध में पराजित हुई।
- ✓ **इस युद्ध के बाद मराठों के दो केंद्र बन गए:**
    1. सतारा – शाहू
    2. कोल्हापूर – शिवाजी II (ताराबाई)
- ✓ शाहू ने सेना के लिए सेनाकर्ता नामक नया पद सृजित किया।
- ✓ इस पद पर सर्वप्रथम बालाजी विश्वनाथ को नियुक्त किया गया।
- ✓ 1713 ई. में बालाजी विश्वनाथ पेशवा बने।
- ✓ ताराबाई ने कोल्हापुर से अपना शासन स्थापित किया।
- ✓ शिवाजी II के बाद राजाराम का दूसरा पुत्र शंभाजी II गद्दी पर बैठा।
- ✓ राजाराम की दूसरी पत्नी राजसबाई ने 1714 में शिवाजी II को गद्दी पर बिठा लिया।
- ✓ राजसबाई के इस षड्यंत्र को महल षड्यंत्र कहा गया।
- ✓ 1731 ई. में कोल्हापुर और सतारा राज्य के महत्वपूर्ण वार्ता-संधि के साथ ही संघर्ष समाप्त हो गया।
- ✓ इस संधि के बाद मराठों का एकमात्र शासक शाहू ही रहा।
- ✓ शाहू के बाद वास्तविक सत्ता पेशवा के हाथ में आ गई।
- ✓ शाहू के समय ही पेशवा पद शक्तिशाली हो गया और छत्रपति केवल नाम मात्र का शासक रह गया।
- ✓ 1749 ई. में शाहू की मृत्यु से पहले राजाराम II को नया छत्रपति बनाया गया।
- ✓ 1750 में संगालों की संधि के बाद पेशवा पद को वंशानुगत कर दिया गया। अब पेशवा वास्तविक शासक बन गए।
- ✓ सतारा में छत्रपति केवल नाममात्र के रह गए।
- ✓ पेशवाओं ने अपना मुख्य केन्द्र पुणे में बनाया।
- ✓ सतारा को 1848 ई. में अप्पा साहिब के समय अंग्रेजों ने राज्य हड़प नीति द्वारा अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया।

Toppersnotes Unleash the topper in you

पेशवाओं का काल

बालाजी विश्वनाथ: 1713-1720 ई.

- ➢ बालाजी विश्वनाथ कुशल प्रशासक था।
- ➢ ये कोंकण के चित्तपाव ब्राह्मण थे।
- ➢ शाहू ने इन्हें सेनापति का पद दिया था।
- ➢ 1713 में शाहू के शासनकाल में ये पेशवा बन गए।
- ➢ बालाजी विश्वनाथ ने मुगल शासक फर्रुख़शियर के खिलाफ सैय्यद बंधुओं का समर्थन किया।
- ➢ फर्रुख़शियर के दरबार में 1719 ई. में दिल्ली में रूफी-उद-दार्ज़त के प्रतिनिधि सैय्यद हुसैन अली तथा बालाजी विश्वनाथ के मध्य संधि हुई, जिसे मुगल-मराठा संधि तथा दिल्ली समझौता कहा जाता है।
- ➢ इस संधि के बाद शाहू को तंजौर, मैसूर, त्रिचन्नापली में चौथ वसूलने का अधिकार मिला।
- ➢ इसी संधि के बाद शाहू की माता यसुबाई और अन्य मराठों को आज़ाद कर दिया गया।
- ➢ इस संधि/समझौते को मुल्ला बदशाह रूफ़ी-उद-दार्ज़त ने हस्ताक्षर करके मान्यता दी।
- ➢ रिचर्ड टेम्पेल ने इस मराठा-मुगल संधि को 'मराठा साम्राज्य का मील का पत्थर' कहा है।

- बालाजी विश्वनाथ ने वेतन के बदले जमीन/भूमि वसूलना आरंभ किया।
- बालाजी विश्वनाथ ने पेशवा का पद वंशानुगत बनाया।
- इनकी मृत्यु 2 अप्रैल 1720 को हुई।
- बालाजी विश्वनाथ को मराठा साम्राज्य का संस्थापक माना जाता है।

बाजीराव प्रथम 1720-1740 ई.

- बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के बाद उनका पुत्र बाजीराव प्रथम पेशवा बना।
- उसने साम्राज्य विस्तार की नीति अपनाई तथा कृष्णा से अटक तक का नारा दिया।
- बाजीराव प्रथम को लड़ाकू पेशवा कहा जाता है।
- शाहू ने बाजीराव प्रथम को "योग्य पिता का योग्य पुत्र" कहा गया।
- इस समय मुगल साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर था।
- बाजीराव ने कहा, "हमें इस जर्जर वृक्ष के तने पर प्रहार करना चाहिए, शाखाएँ तो स्वयं ही गिर जाएँगी।"
- बाजीराव प्रथम ने 1728 को हैदराबाद के निजाम को पालखेड़ा के युद्ध में हराया।
- 6 मार्च 1728 को निजाम और मराठों के बीच मुंगी शिवगांव की संधि हुई।
- इस संधि के बाद दक्षिण भारत में मराठे सबसे शक्तिशाली बन गए।
- संधि के अनुसार निजाम ने चौथ और सरदेशमुखी देना स्वीकार किया।
- इसी संधि के बाद छत्रपति को दक्षिण में मान्यता मिली।
- बाजीराव प्रथम के भाई का नाम चिमना जी था।
- चिमना जी अप्पा ने 1728 में मालवा के सूबेदार गिरधर बहादुर को अमझेरा के युद्ध में पराजित किया और मराठों ने मालवा पर अधिकार कर लिया।
- 1732 ई. में बाजीराव प्रथम ने गुजरात को मुगलों से छीन लिया। उस समय गुजरात का गवर्नर जोधपुर का शासक अभयसिंह था।
- बुंदेलखंऑ के छत्रसाल बुन्देला को 1730 ई. में इलाहाबाद के मुगल सूबेदार मुहम्मद खाँ बंगस की कैद से मुक्त करवाया।
- छत्रसाल ने अपने पुत्रों जगतराव तथा हिरदेशाह को पेशवा की सेवा में भेजा।
- छत्रसाल ने मस्तानी नामक कन्या को उपहार में पेशवा को दिया।
- 1737 ई. में अवध के नवाब सादत खाँ ने मल्हार राव होल्कर को हराया।
- 29 मार्च 1737 को पेशवा बाजीराव प्रथम यमुना पर पहुँचा।
- 7 जनवरी 1738 को निजाम और बाजीराव के बीच सिरोज (दुरई-सराय) की संधि हुई।
- बाजीराव प्रथम ने 1739 में पुर्तगालियों से सालसीट और बसीन छीन लिए।
- 1739 में दिल्ली पर ईरान के नादिरशाह ने आक्रमण किया। बाजीराव के सेनापति त्रयम्बक राव ने वीरता दिखाई।
- मराठा संघ के पाँच सदस्य थे:
  1. पूना – पेशवा
  2. ग्वालिएर – सिंधिया
  3. इंदौर – होल्कर
  4. नागपुर – भोंसले
  5. बड़ौदा – गायकवाड़
- बाजीराव प्रथम ने हिंदुपदपादशाही का आदर्श रखा।

- 1731 ई. में शाहू और संभाजी II के बीच वारना की संधि हुई (13 अप्रैल 1731)।
- इस संधि के बाद शाहू और संभाजी II के मध्य एकता की स्थापना हुई।
- 18 मई 1740 को बाजीराव प्रथम की मृत्यु हो गई। उसके पुत्र बालाजी बाजीराव पेशवा बने।
- मस्तानी का पुत्र शमसेर बहादुर था, जो पानीपत के युद्ध में मारा गया।
- बाजीराव प्रथम की मृत्यु के बाद मस्तानी सती हो गई थी।

बालाजी बाजीराव (1740-1761 ई.)

- बालाजी बाजीराव को बालाजी II या नाना साहब के नाम से जाना जाता है।
- 1741 ई. में सवाई जयसिंह और बालाजी बाजीराव के बीच धौलपुर समझौता हुआ। इस समझौते के बाद मुगलों ने मराठों के अधिकार को मान्यता दी।
- दिसंबर 1749 को शाहू की मृत्यु के बाद नया छत्रपति रामराजा बना।
- रघुजी भोंसले की मध्यस्थता से रामराजा और पेशवा के बीच 14 जनवरी 1750 को संगोला की संधि हुई।
- इस संधि के बाद पेशवा मराठों का सर्वेसर्वा बन गया और छत्रपति केवल नाममात्र के शासक रह गए।
- बालाजी बाजीराव ने मुगल शासक अहमदशाह से 1752 में संधि कर ली। इस संधि के बाद मराठों को सम्पूर्ण मराठा क्षेत्रों में चौथ वसुली का अधिकार प्राप्त हुआ।
- उसी वर्ष ही निजाम से झलकी की संधि कर ली गई, जिसके अंतर्गत निजाम ने मराठों को बरार का बड़ा भाग सौंप दिया।
- **पानीपत का तीसरा युद्ध -** 14 जनवरी 1761 ई
  - ✓ यह युद्ध मराठों व अफगानों के मध्य लड़ा गया ।
  - ✓ इस समय मराठा पेशवा बालाजी बाजीराव था।
  - ✓ इस समय मुगल शासक शाहआलम था।
  - ✓ यह युद्ध मराठों व अवगानिस्तान के शासक अहमदशाह अब्दाली के मध्य हुआ।
  - ✓ अहमदशाह अब्दाली ने 1748 से 1767 तक भारत पर कुल आक बर आक्रमण किया। अब्दाली को दुर्रे-दुर्रनी कहा जाता है। (युग का मोती)
  - ✓ आठवां आक्रमण पंजाब राज्य पर हुआ था।
  - ✓ अब्दाली का चौथा आक्रमण दिल्ली पर हुआ।
  - ✓ अब्दाली का पांचवा आक्रमण पानीपत का युद्ध (1761) था।
  - ✓ अब्दाली से लड़ते हुए दतो जी सिंधिया मारा गया। (दिल्ली की रक्षा करते हुए)
  - ✓ दत्ता जी की मृत्यु का समाचार पाकर बालाजी बाजीराव ने सदाशिवराव भाऊ के नेतृत्व में विशाल सेना भेजी।
  - ✓ अगस्त 1760 में मराठा सेना दिल्ली पहुँची।
  - ✓ इस सेना का नेतृत्व बत्ताजी बाजीराव, उनके पुत्र विश्वसाराव और चिमनाजी अप्पा के पुत्र सदाशिव भाऊ, के हाथों में था।
  - ✓ विश्वसाराव की आयु 17 वर्ष थी। सदाशिव भाऊ के व्यवहार के कारण आंतरिक विवाद हुआ और भरतपुर का जाट राजा सूरजमल नाराज हो गया।
  - ✓ अब्दाली का साथ देने वाले:
    - रुहेलखंड का नजीबुद्दौला
    - मुगल शासक शाह आलम II
    - अवध का नवाब शुजाउद्दौला
  - ✓ अब्दाली तथा पेशवा की सेना नवम्बर 1760 मे पानीपत के मैदान में पहूँची।

- ✓ 14 जनवरी 1761 में युद्ध शुरु हुआ। मल्हाराव होल्कर युद्ध के बीच ही भाग निकला।
- ✓ इस युद्ध में मराठों का तोपची इब्राहीम गर्दी था। जो इस युद्ध में ही मारा गया।
- ✓ इसमें अब्दाली की जीत हुई।
- ✓ लगभग 30000 मराठा सैनिक इस युद्ध में मारे गये।
- ✓ सदाशिवराव भाउ, विश्वासराव, तुकोजी होल्कर, जनकोजी सिन्धिया, जसंवतराव पंवार आदि मारे गये।
- ✓ एक व्यापारी ने इस पराजय की सूचना बालाजी बाजीराव को दी और बताया 24 जनवी 1761 को "दो मोती विलीन हो गये, बाईस सोने की मुहरें लुप्त हो गईं तथा चांदी व तांबे की तो गणना की संभव नहीं है। "
- ✓ 23 जून 1761 को बालाजी बाजीराव की मृत्यु हो गयी।
- ✓ यदुनाथ सरकार का कथन" मराठा मुकुटमणी पानीपत में खो गयी, हिन्द स्वराज का स्वपन धुमिल हो गया।"
- ✓ यदुनाथ सरकार का कथन " महाराष्ट्र में एक भी परिवार ऐसा नहीं रहा जहां किसी कि मृत्यु न हुई हो।"
- ✓ सरदेशाई का कथन" जब पानीपत में मराठे हारे थे तो उस समय रॉबर्ट क्लाइव ब्रिटिश प्रधानमंत्री चैथम के पास जा रहा था यह बताने कि भारत मे अब ब्रिटिश साम्राज्य स्थापित कर सकते है।"
- ✓ मराठों की इस हार से सर्वाधिक लाभ अंग्रेजों को हुआ ।
- ✓ दक्षिण भारत में हैदरअली का उत्थान हुआ।
- ✓ रिचर्ड टेम्पेल के अनुसार -मराठा साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार बालाजी बाजीराव के समय हुआ ।
- ✓ "बालाजी बाजीराव के के घोड़े हिमालय से कन्याकुमारी तक झरनों का पानी पीते थे।"

➢ **माधवराव -** 1761-1772

- ✓ 17 वर्ष की आयु में माधवराव प्रथम नया पेशवा बना।
- ✓ माधवराव का सरंक्षक रघुनाथराव बना।
- ✓ 1763 में माधवराव प्रथम ने निजाम को हराया। निजाम व पेशवा माधवराव के मध्य राक्षसभुवन की सन्धि हुथी।
- ✓ इस संधि के बाद पेशवा पर राघोबा (रघुनाथराव) का नियंत्रण समाप्त हुआ।
- ✓ माधवराव ने मैसूर के हैदरअली के विरुद्ध 4 बार अभियान किया ।
- ✓ 1771 में माधवराव ने हैदरअली को पराजित किया। हेदरअली व पेशवा के मध्य संधि हो गयी।
- ✓ नवम्बर 1772 में क्षय रोग से माधवराव की मृत्यु हो गयी।
- ✓ मराठा साम्राज्य के लिये पानीपत का युद्ध "उतना घातक सिद्ध नहीं हुआ, जितना इस माधवराव की मृत्यु से हुआ ।"- ग्रान्ट डफ

➢ **नारायण राव -** 1772-13

- ✓ यह माधवराव का छोटा भाई था।
- ✓ 30 अगस्त 1773 को राघोबा (रघुनाथराम) ने नारायण राव की हत्या कर दी।

➢ **माधवराव नारायण 1774-1796 ई**

- ✓ इसे माधवराव II भी कहा जाता है
- ✓ इसके समय शासन संचाालन के लिये एक परिषद बनाई जिसका मुख्य प्रधान नाना फड़नवीस था।
- ✓ नाना फड़नवीस पेशवा माधवराव नारायण के संरक्षक थे।
- ✓ नाना फड़नवीस को मराठा मैक्यावली कहा जाता है।
- ✓ नाराज रघुनाथ राव ने 1775 में अंग्रेजों से सूरत संधि की। जिसके कारण प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध हुआ ।
- ✓ रघुनाथ राव को मराठी खलनायक कहा जाता है
- ✓ नाना फड़नवीस के नियंत्रण से तंग आकर 1796 मे माधवराव नारायण ने आत्महत्या कर ली।

- **बाजीराव द्वितीय**
    - ✓ यह राघोबा का पुत्र था।
    - ✓ यह अतिम पेशवा था।
    - ✓ 1802 में बाजीराव ॥ ने अंग्रेजों से बसीन की संधि की।
    - ✓ 1818 में अंग्रेजों ने पेशवा पद को समाप्त कर दिया। उसे 18 लाख रूपये वार्षिक पेंशन देकर बिठूर (कानपुर, UP) भेज दिया था।
    - ✓ इसके बाद मराठा पेशवा अंग्रेजों के अधीन जा चुके थे ।

<u>अंग्रेज व मराठा संबंध</u>

- अंग्रेजों व मराठों के मध्य (1775-1818. के मध्य तक) तीन युद्ध हुए जिन्हे आंग्ल मराठा युद्ध कहा जाता है।
- **प्रथम आंग्ल- मराठा युद्ध -** 1775-1782ई
    - ✓ इस युद्ध का कारण 1775 की सूरत की संधि थी।
    - ✓ सूरत की संधि 6 मार्च 1775 को रघुनाथ राव (राघोबा) व अग्रेजों के मध्य हुई। अंग्रेजी गवर्नर कर्नल फीटिंग ने इस पर हस्ताक्षर किये।
    - ✓ इस संधि के तहत् अग्रेजो ने राघोबा को पेशवा स्वीकार कर लिया।
    - ✓ राघोबा ने अंग्रेजों का साथ पाकर पूना अभियान किया।
    - ✓ 18 मई 1775 को अर्रा के युद्ध में पेशवा की सेना के राघोबा को हराया।
    - ✓ पेशवा की सेना का नेतृत्व हरिपंत फड़के ने किया था।
    - ✓ अंग्रेजों ने बड़ौदा के फतेहसिंह गायकवाड़ को अपनी तरफ मिलाया।
    - ✓ ब्रिटिश गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स से सूरत संधि को मानने से मना कर दिया।
- **पुरन्दर की संधि -1 मार्च 1776**
    - ✓ यह संधि अग्रेजी प्रतिनिधी (वारेन होस्टिंग्स का) व नाना फड़नवीस के मध्य हुई।
    - ✓ 1 मार्च 1776 को सूरत संधि को रद्द कर दिया गया।
    - ✓ माधवराव नारायण को पेशवा माना गया।
    - ✓ राघोबा को गुजरात के कोपरगांव भेज दिया (3 लाख वार्षिक पेंशन पर)
    - ✓ पुन्दर की संधि से नाराज बम्बई सरकार ने ब्रिटेन स्थित बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स को कई बार शिकायत की।
    - ✓ लन्दन सरकार ने पुरन्दर की संधि को रद्द कर दिया तथा सूरत की संधि को ही उचित माना।
    - ✓ वारेन हेस्टिंग्स ने भी पुरन्दर की संधि को एक कागज का टूकड़ा माना।
    - ✓ बम्बई सरकार तथा बंगाल सरकार दोनों ने जाना साहब फड़नवीस / पेशवा के विरुद्ध युद्ध अभियान की योजना बनाई।
- **तलगांव का युद्ध -** 3 जनवरी 1779 ई.
    - ✓ अंग्रेजों व मराठों के मध्य
    - ✓ पराजित - अंग्रेज
    - ✓ 15 जनवरी को अंग्रेजी सेना ने बड़गांव में आत्मसमर्पण किया।
    - ✓ मराठों की इस जीत में मुख्य योगदान महादजी सिंधिया का था।
    - ✓ अंग्रेजों तथा मराठों के मध्य बड़गांव की संधि हुथी।

- **बड़गाव की संधि - 29 जनवरी 1779 ई.**
  - ✓ संधि मराठों व अंग्रेजों के मध्य तलगांव के युद्ध के बाद हुई।
  - ✓ वारेन हेस्टिंग्स के हस्ताक्षर करने तक अंग्रेज अधिकारी फारमर तथा स्टीवर्ट बंधक के रूप में महादाजी सिंधिया के पास रहे।
  - ✓ वारेन होस्टिंग्स ने कहा " इस संधि की शर्तों को देखने पर मेरा सिर शर्म से झुक जाता है। "
  - ✓ वारेन हेस्टिंग्स ने अपमान का बदला लेने ग्वालिएर में गोडार्ड को तथा पूना मे पोफम मोकम को भेजा।
  - ✓ यहां मराठों को बुरी तरह पराजित किया गया।
- **सालबाई की संधि - 17 मई 1782**
  - ✓ महादजी सिंधिया तथा एण्डरसन (होस्टिंग्स का प्रतिनिधि) के मध्य
  - ✓ इस संधि में कुल 17 धाराएं थी'
  - ✓ इसी साही के साथ ही प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध की समाप्ति हो गयी।
  - ✓ हेस्टिंग्स ने कहा" मेंरे काल के कठिन समय की सबसे सफल संधि थी"।
- **द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध - 1803-1806 ई.**
  - ✓ 10 वर्ष की शांति व्यवस्था के बाद 1795 ई. में मराठा पेशवा ने निजाम को खरदा के युद्ध में हराया।
  - ✓ यह 'युद्ध विजय मराठा पेशवा की आखिरी विजय थी।
  - ✓ दूसरा आंग्ल मराठा युद्ध दो चरणों में हुआ था।
  - ✓ 1800 ई में नाना फड़नवीस की मृत्यु हो गई।
  - ✓ इसकी मृत्यु के बाद पेशवा बाजीराव II ने अपनी स्थिति को मजबूत बनाने के लिये मराठा - सरदारों को आपस में लड़वाया।
  - ✓ महादजी सिंधिया का उत्तराधिकारी दौलतराव सिंधिया पेशवा के साथ हो गया।
  - ✓ अप्रेल 1801 में बाजीराव ॥ ने जसवंत राव होल्कर के भाई बिठूजी की पूना में हत्या करवा दी।
  - ✓ होल्कर ने 1802 में पेशवा को पराजित किया तथा पूना पर अधिकार कर लिया।
  - ✓ पूना में नया पेशवा विनायकराव को बना दिया।
  - ✓ बाजीराव II बसीन जाकर अंग्रेजों के पास शरण लेता है। यहीं पर 1802 मे पेशवा ने अंग्रेजों से बसीन की साँध कर ली।
- **बसीन की संधि - 31 दिसम्बर 1802**
  - ✓ यह पेशवा (बाजीराव II) व अंग्रेजों के मध्य हुथी।
  - ✓ 'इसमे कुल 19 धारायें थी।
  - ✓ "जो राज्य शिवाजी' ने तैयार किया था उस राज्य को मराठों ने बसीन की संधि में खो दिया"- सरदेसाई
  - ✓ यह संधि मराठों के लिये राष्ट्रीय अपमान से कम नहीं थी।
  - ✓ इसी संधि के बाद मराठों ने सूरत कंपनी को दे दिया।
  - ✓ इसी संधि के तहत मराठों ने अंग्रेजों का संरक्षण स्वीकार कर लिया।
  - ✓ आर्थर वेलेजली- "यह संधि एक बेकार आदमी के साथ की गई संधि थी।"
  - ✓ 23 सितम्बर 1803 को असाय असई के मैदान में वेलेजली ने सिंधिया व भोंसले की संयुक्त सेना को हराया।
  - ✓ 29 Nov. 1803 को अरगांव के युद्ध में सिंधिया को पुनः हराया गया ।
  - ✓ भोंसले व सिंधिया ने अंग्रेजों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।
  - ✓ 17 दिसम्बर 1803 को भोंसले ने अंग्रेज़ों से देवगांव की संधि कर ली।
  - ✓ 30 दिसम्बर 1803 को दौलतराव सिंधिया ने भी सुरजी-अर्जुन गांव की संधि की।
  - ✓ 8 जुलाई 1804 को जसवंत राव होल्कर ने अंग्रेज अधिकारी, मान्सन को हराया।
  - ✓ होल्कर ने 1804 में दिल्ली पर घेराव डाला तब डेविड ऑक्टरलोनी ने दिल्ली को बचाया।
  - ✓ होल्कर ने भरतपुर के शासक रणजीत सिंह के पास सिंहगठ में शरण ली
  - ✓ जनरल लेक ने सिंहगढ़ पर कई बार असा आक्रमण किये किन्तु सफल नहीं हो सका ।

- ✓ अप्रेल 1805 को अंग्रेजों व भरतपुर (रणजीत सिंह) के मध्य संधि हो गयी।
- ✓ संधि के बाद भरतपुर से सहायता होल्कर को नहीं मिली।
- ✓ होल्कर ने पंजाब के शासक रणजीतसिंह से भी सहायता माँगी लेकिन सहायता नहीं मिली।
- ✓ 25 दिसम्बर 1805 को होल्कर व जार्ज बार्लो के मध्य राजपुर घाट की संधि हो गयी।
- ✓ इसी साही के साथ ही दुसरा भोग्ल मराग युद्ध समाप्त हो गया ।

➢ **तृतीय आंग्ल-मरागं युद्ध - 1817-1818 ई.**
- ✓ इस समय गवर्नर जनरल लाई हेस्टिंग्स था।
- ✓ जब होस्टिंग्स के पिण्डारियो का दमन किया तब पिण्डारियों की सेना मे मराठे भी काम करते थे।

➢ **नागपुर की संधि - 27 मई 1816**
- ✓ हेस्टिंग्सग्स व नागपुर के अप्पा साहब भौंसले के मध्य ।

➢ **पूना की संधि -13 जून 1817**
- ✓ पेशवा व अंग्रेजों के मध्य
- ✓ इस सान्ही के बाद मराठा संघ समाप्त हो गया।

➢ **फिर्की का युद्ध -5 नवम्बर 1817**
- ✓ पेशवा (बाजीराव (11) व अंग्रेजों के मध्य
- ✓ इस युद्ध में पेशवा का सेनापति बापू गोखले मारा गया ।

➢ **सीताबाड़ी का युद्ध - 27 नवम्बर 1817**
- ✓ अंग्रेज व भोंसले के मध्य
- ✓ विजय - अंग्रेज

➢ **महीदपुर का युद्ध - 24 दिसम्बर 1817**
- ✓ होल्कर व अंग्रेज
- ✓ विजय - अंग्रेज

➢ **मन्दसौर की सान्ही - 6 जनवरी 1818**
- ✓ यह मल्हार राव होल्कर व अंग्रेजों के मध्य सहायक संधि थी।
- ✓ 1818 में तीसरा आंग्ल मराठा युद्ध समाप्त हो गया। बाजीराव II को पेंशन देकर कानपुर भेज दिया।
- ✓ 1818 में ही अंग्रेजों ने पेशवा पद को समाप्त कर दिया।

भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन

1. पुर्तगाली
- ✓ कालखण्ड - 1498-1961
- ✓ 15 वीं शताब्दी में हुई भौगोलिक खोजों ने भारत व यूरोप के व्यापारिक संबधो पर सकारात्मक प्रभाव डाला था।
- ✓ 1492 ई में स्पेन के कोलम्बस ने भारत खोज यात्रा शुरु की, लेकिन वह भारत के स्थान पर अमेरिका पहुंच गया। अमेरिका को उसने नई दुनिया नाम दिया।
- ✓ अमेरिका की खोज करने वाला पहला विद्वान कोलम्बस था ।
- ✓ अमेरिगो वेस्पूची के नाम पर बाद में इसका नाम अमेरिका पड़ा।
- ✓ 1487 ई. में पुर्तगाल के बोथोलोम्यु डियाज को जॉन द्वितीय ने यात्रा पर भेजा बोथोलोम्यू अफ्रीका के दक्षिण छोर पर पहुंचा।
- ✓ बोथोलोन्यू ये अफ्रीका के इस छोर को तुफानों का, अन्तरीय कहा।
- ✓ जिसे आज Cape of Good hope कहा जाता है